2

पत्र कैसे लिखवाएँ

अक्षय कुमार दीक्षित*

साहित्य की एक विधा है-पत्र। प्राथमिक स्तर पर भाषा की कक्षा में बच्चों को पत्र लिखना सिखाया जाता है, लेकिन पत्र लिखना सिखाने का यह ढंग बँधे-बँधाए तरीके से होता है जिससे पत्र लिखना एक नीरस प्रकिया बनकर रह जाता है। बच्चों के अपने अनुभवों को पत्र में स्थान दिया जाए तो उन्हें पत्र लिखने में आनंद भी आएगा और वे बड़ी आसानी से पत्र लिखना सीख भी जाएँगे। पत्र लिखने की प्रकिया को रुचिकर कैसे बनाया जा सकता है। जानने के लिए पढ़ते हैं पत्र-लेख कैसे लिखवाएँ।

रश्मि जी पाँचवीं कक्षा को पढ़ाती हैं। वे बच्चों को व्यक्तिगत पत्र लिखवाना चाहती हैं। यह विषय पाठ्यक्रम में सम्मिलित है, परंतु बच्चे पत्र लिखने के इच्छुक नहीं हैं। हाँ, पत्रों के बारे में बातचीत करने में उन्हें बहुत आनंद आता है।

रश्मि जी एक दिन कक्षा में पुराने पत्र, कुछ पोस्टकार्ड, लिफाफे आदि ले गईं। उन्होंने बच्चों को वे पत्र दिखाए और बातचीत प्रारंभ कर दी। उन्होंने बच्चों से पूछा, ''आपमें से किस-किसके घर में कभी कोई पत्र आया है? या किस-किसने ऐसे पत्र देखे हैं?''

कुछ बच्चों ने बताया कि उनके घर एक बार ऐसा पत्र आया था या उनके पिताजी ने गाँव में पत्र लिखा था। रश्मि जी जानती हैं कि बच्चों के घरों में बहुत अधिक पत्र नहीं आते होंगे और न ही उनके घर कोई पत्र लिखता होगा। बधाई कार्ड तो फिर भी कभी-कभार घरों में मिल जाते हैं। कभी-कभी औपचारिक पत्र भी आ जाते हैं, परंतु व्यक्तिगत पत्र लिखने या पढ़ने की केवल कल्पना ही की जा सकती है। रश्मि जी सोच रही थीं कि कैसे बच्चों को एहसास करवाया जाए कि पत्र लिखना ज़रूरी है। क्या यह कहा जाए कि पत्र लिखना सीखने से परीक्षा में अच्छे अंक आ जाएँगे? क्या यह कहूँ कि पत्र लिखने से मनोरंजन होगा? या कहूँ कि खाली समय में पत्र लिखकर समय व्यतीत किया जा सकता है?

अनुभव बाँटना- रश्मि जी ने बच्चों को अपने अनुभव बताए कि जब उनको पत्र मिला तो उसे पढ़कर उन्हें कितनी प्रसन्नता हुई। उन्होंने यह भी

* *शिक्षक*, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली

बताया कि जब उन्होंने पहली बार पत्र लिखा तो क्या-क्या दिक्कतें आईं या उन्हें कैसे अनुभव हुए, जैसे- पत्र कहाँ से लाईं, कितने का आया, किसने पैसे दिए, ये सब छोटी-छोटी बातें रश्मि जी याद कर वास्तविकता बता रही थीं। इसके बाद उन्होंने थोड़ा विस्तार से बताया कि उन्होंने पत्र लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखा। बाद में उन्होंने पत्रों में बच्चों की रुचि जागृत करने के लिए एक गतिविधि करवाई।

गतिविधि-रश्मि जी ने बच्चों के सामने कुछ सवाल रखे और बच्चों से उनके उत्तर सोचने के लिए कहा–

1. जिसे पत्र लिख रहे हैं, उसका पता कागज़ के दाएँ कोने पर क्यों लिखा जाता है?
2. कंप्यूटर में तो सब कुछ बाईं तरफ से शुरू होता है। कुछ लोग बाएँ हाथ से लिखते हैं। क्या बाईं तरफ लिखा जा सकता है?
3. पत्र को एक विशेष रूप में ही क्यों लिखा जाना जरूरी है?
4. क्या पत्र में भेजने वाले का पूरा पता होना ज़रूरी है?
5. पते में पिन कोड लिखने से क्या फ़ायदा होता है?
6. डाकिया पत्र को सही जगह कैसे पहुँचा पाता है? क्या उसे हर इंसान का पता याद होगा?

बच्चों ने इन प्रश्नों पर चर्चा करके कक्षा में सबको बताया। रश्मि जी ने जहाँ ज़रूरत समझी, वहाँ उनके उत्तरों में अपनी बात जोड़ दी। अब उन्हें यह लगने लगा था कि बच्चों के मन में पत्रों के प्रति उत्सुकता जाग चुकी है।

समूह कार्य

अब रश्मि जी ने कक्षा के बच्चों को कुछ समूहों में बाँट दिया। प्रत्येक समूह को उन्होंने कुछ व्यक्तिगत पत्र दे दिए। ये पत्र उन्होंने पिछली कक्षा में बच्चों से लिखवाए थे। कुछ पत्र अन्य कक्षाओं से भी प्राप्त हो गए थे। रश्मि जी ने प्रत्येक समूह को 5-5 पत्र दिए। बच्चों से उन्होंने कहा, '' ये पत्र आप जैसे बच्चों ने लिखे हैं। आप प्रत्येक पत्र को पढ़कर समूह में चर्चा करें और बताएँ कि कौन-सा पत्र इन पत्रों में सबसे अच्छा है और क्यों?''

इस गतिविधि को कराने के पीछे रश्मि जी का उद्देश्य था कि बच्चे प्रत्येक पत्र को पढ़ेंगे और उनकी कमियों और अच्छाइयों पर ध्यान देंगे। रश्मि जी ने अपनी ओर से नहीं कहा कि वे पत्रों की कमियों या खूबियों की सूची बनाएँ। बच्चे यह कार्य अप्रत्यक्ष रूप से करेंगे।

दस मिनट बाद रश्मि जी ने प्रत्येक समूह में से एक बच्चे को सबके सामने आकर अपने समूह के निष्कर्ष बताने के लिए कहा। प्रत्येक समूह से एक बच्चे ने आकर अपने समूह द्वारा चुना गया सर्वश्रेष्ठ पत्र दिखाया और उसके बारे में बताया। कक्षा के अन्य बच्चों ने और रश्मि जी ने पत्र के बारे में कुछ सवाल पूछे जिनसे यह साबित करने में मदद मिली कि वास्तव में वही पत्र सर्वश्रेष्ठ था। उदाहरण के लिए - क्या इस पत्र में पूरा पता लिखा है? क्या डाकिया इस पत्र को सरलता से पहुँचा सकता है? क्या इसमें भेजने वाले ने अपना नाम, शहर का नाम, तिथि आदि लिखी है? आदि।

यह सब काम कराने का लाभ था कि बच्चे समझ सकेंगे कि व्यक्तिगत पत्रों के लेखन में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाता है और पत्रों की गुणवत्ता का आकलन किन कसौटियों के आधार पर किया जा सकता है। रश्मि जी ने पत्रों के विषय पर भी चर्चा की - पत्र लेखक ने पत्र में कौन-कौन सी बातें बताई हैं? कौन-कौन सी बातें बताई जा सकती थीं? आदि।

कुछ कसौटियाँ निम्नलिखित हो सकती हैं-

1. विचारों की स्पष्टता
2. कृतज्ञता, धन्यवाद आदि शिष्टाचार का पालन
3. शब्दों, वाक्यांशों की संख्या
4. भाषा का समुचित उपयोग
5. पूरा पता, पिन कोड सहित
6. तिथि

इसके बाद रश्मि जी ने बच्चों को अपनी पसंद के व्यक्ति को पत्र लिखने के लिए प्रेरित करने का निश्चय किया। किसी को पत्र लिखने के लिए उसके साथ भावात्मक संबंध होना ज़रूरी है। यह संबंध माता-पिता, रिश्तेदारों, मित्रों आदि के साथ हो सकता है। यह संबंध किसी पालतू पशु, खिलौनों, गुड़िया, पेड़, चंद्रमा, तारे, परी या भगवान से भी हो सकता है। इसलिए रश्मि जी ने निश्चय किया कि वे प्रारंभ में उन्हीं व्यक्तियों/वस्तुओं को संबोधित करते हुए पत्र लिखवाएँगी, जिनसे बच्चों के भावनात्मक संबंध हैं।

रश्मि जी ने बच्चों को बताया कि इन्हीं कसौटियों को ध्यान में रखते हुए एक पत्र लिखना है। उन्होंने बच्चों की सहमति से इस कार्य के लिए समय का निर्धारण कर लिया। यह भी बताया कि सब मिलकर सबसे अच्छे बीस पत्र चुनकर उनको प्रदर्शन बोर्ड पर लगाएँगे।

कृतज्ञता पत्र

पत्र का एक अन्य प्रकार समझाने के लिए रश्मि जी ने निश्चय किया कि अगले महीने वे बच्चों से कृतज्ञता पत्र लिखवाएँगी। उन्होंने बच्चों को समूहों में बाँट दिया और कहा, ''ऐसी वस्तुओं की सूची बनाइए जो रोटी, कपड़ा और मकान के अलावा आपको ज़रूरी लगती हैं। यह भी बताइए कि ये कहाँ से मिलती हैं?''

रश्मि जी जानती थीं कि इस कार्य में बच्चों को उनकी सहायता की ज़रूरत पड़ेगी क्योंकि बच्चों को इस प्रकार की समस्या का पहले सामना नहीं करना पड़ा है तथा उनमें हिचकिचाहट भी है। हो सकता है कि कुछ बच्चों को पिछली कक्षाओं में एक ही सही उत्तर लिखने या सोचने की आदत पड़ चुकी हो। इसलिए रश्मि जी प्रत्येक समूह में जाकर देखने लगीं कि वे क्या लिख रहे हैं या क्या सोच रहे हैं। उनके प्रोत्साहन और प्रशंसा से बच्चे सही दिशा में सोचने लगे। रश्मि जी ने कुछ समूहों से कुछ प्रश्न पूछें, ताकि वे सही दिशा का पता लगा सकें जैसे-

1. आकाश से क्या मिलता है?
2. माता-पिता से क्या मिलता है जो किसी और से नहीं मिलता?
3. क्या चीज़ पैसे से खरीदी नहीं जा सकती?
4. तुम्हारी पसंद का खाना कौन बनाता है?
5. दोस्त अच्छे क्यों लगते हैं?

इस गतिविधि के बाद उन्होंने प्रत्येक समूह में से एक प्रतिनिधि को बुलाया और अपने समूह की सूची सुनाने को कहा। सभी समूहों की प्रस्तुति के बाद वे सूचियाँ प्रदर्शन पर लगा दी गईं।

इसके बाद रश्मि जी ने कहा, ''हमारे जीवन में इतनी चीज़ें हैं जो हमें दूसरों से मिलती हैं। हम भी दूसरों को बहुत कुछ देते हैं पर क्या कभी हमने उनके कार्यों के लिए उनकी तारीफ़ की? कभी धन्यवाद कहा? क्या हमें किसी ने कभी धन्यवाद कहा या तारीफ़ की?''

रश्मि जी की बात सुनने के बाद बच्चे उन्हें चुपचाप टुकुर-टुकुर देखने लगे। कक्षा के एक कोने से जवाब आया कि, 'हाँ, मैंने इसे कहा था।'

कुछ पलों के बाद रश्मि जी ने कहा, ''आज हम किसी एक व्यक्ति को पत्र लिखकर बताएँगे कि वह हमें कितना अच्छा लगता है और उसे उन सब कामों के लिए धन्यवाद कहेंगे जो वह हमारे लिए करता है। वह व्यक्ति कोई भी हो सकता है। तुम्हारे माता-पिता, रिश्तेदार, मित्र या कोई पशु-पक्षी, पेड़-पौधा कोई भी।''

यह सब सुनने के बाद बच्चे बड़े उत्साह से पत्र लिखने लगे। जब रश्मि जी ने पत्र पढ़े तो वे प्रसन्नता से भर गईं क्योंकि कई बच्चों ने पत्र उनके नाम लिखे थे।

पत्र लेखन का इतिहास उतना ही पुराना है जितनी पुरानी मानव सभ्यता है। इसके बावजूद हमारी शिक्षण व्यवस्था में पत्र लेखन के नाम पर दो-चार घिसे-घिसाए पत्र बँधे-बँधाए ढर्रे से लिखवा दिए जाते हैं, जैसे- बीमारी के कारण अवकाश, जन्मदिन पर बधाई, उपहार का धन्यवाद, स्थानांतरण का प्रमाणपत्र आदि। यकीनन आपने भी अपने विद्यार्थी जीवन में इन्हीं पत्रों को लिखा होगा।

अब घरेलू पत्रों की बात करें। हालाँकि अब घरों में भी पत्र कम ही आते हैं, लिखने का समय किसके पास है भला। समय की कमी से भी ज़्यादा कमी है-अपनेपन की।

जब कोई हमें पत्र लिखता है तो उस पत्र को हाथ में पकड़ने मात्र से जो सुख मिलता है, वह किसी फोन-ईमेल आदि से नहीं मिल सकता। और जब आप उस को पढ़ते हैं, तब बिना किसी फोन के ही आप पत्र लेखक से बातें करने लगते हैं। दुर्भाग्य से इस आनंद को प्राप्त करने के अवसर अब दुर्लभ होते जा रहे हैं, क्योंकि पत्र लेखन को इतना कृत्रिम और रस्मी कार्य बना दिया गया है।

क्या 'अत्र कुशलम तत्रस्तु' या 'सविनय निवेदन यह है कि' के बिना पत्र नहीं लिखे जा सकते? जब किसी घटना को भी बेड़ियों में जकड़ दिया जाता है, तो उसमें स्वाभाविकता का अभाव अपने आप हो जाता है।

समाज में पत्र-लेखन की परंपरा को बनाए रखना हमारे ही हाथ में है। एक व्यक्ति के रूप में भी और एक शिक्षक के रूप में भी। हम जब किसी को पत्र लिखेंगे तो संभवतः वह भी पत्र लिखने के लिए प्रेरित होगा। एक शिक्षक के रूप में तो हम और भी बहुत कुछ कर सकते हैं। कुछ सुझाव आगे दिए गए हैं-

1. परंपरागत कृत्रिम विषयों के बजाए ऐसे विषय चुनें जिनपर पत्र लिखने के लिए बच्चे उत्सुक हो जाएँ।
2. बच्चों को आज़ादी दें। उनसे पूछें कि वे किसे पत्र लिखना चाहते हैं और किस बारे में लिखना चाहते हैं।
3. बँधे-बँधाए जुमलों का इस्तेमाल करने की प्रेरणा न दें। बच्चों को बताएँ कि पत्र उसी तरह लिखना चाहिए जिस तरह हम अपने किसी प्रिय व्यक्ति से बातें करते हैं। शब्दाडंबर की पत्र-लेखन में कोई जगह नहीं है।
4. परीक्षा में भी परंपरागत विषय न देकर बच्चों के जीवन से जुड़े विषय दें।
5. यदि संभव हो तो बच्चों को पत्र लिखिए। उन्हें डाक द्वारा बच्चों के घर तक पहुँचा दीजिए। या स्कूल में ही एक बच्चे को 'डाकिया' बनाकर बच्चों को पत्र प्राप्त करने दें। 'पत्र पाने' की खुशी जब बच्चों को मिलेगी, तब वे भी पत्र लिखने को प्रेरित होंगे।
6. बच्चों को कहिए कि वे छुट्टियों में आपको पत्र लिखें। पत्र आपके घर या स्कूल के पते पर भेजें। इससे आपका और बच्चों का भावात्मक संबंध और मज़बूत बनेगा। जब आप वे पत्र बच्चों को दिखाएँगे, तब डाक प्रणाली पर बच्चों का विश्वास और मज़बूत होगा और वे समझ जाएँगे कि डाक-पेटी में डाला गया पत्र वास्तव में गंतव्य तक पहुँच जाता है।
7. 'बीमारी के कारण अवकाश' जैसे विषय केवल तब ही न्यायपूर्ण समझे जा सकते हैं जब आपके विद्यालय में बच्चे के लिखे पत्र द्वारा अवकाश स्वीकृत किया जाता हो। यदि आपके विद्यालय में बच्चों को छुट्टी लेने के लिए अभिभावक से पत्र लिखकर लाना पड़ता है और परीक्षा में आप विद्यार्थी की ओर से पत्र लिखवा रहे हैं तो यह तर्कपूर्ण नहीं कहा जा सकता है।

❑❑❑